بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्ब: जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़
बयान फ़र्मूदा 17 जुलाई, 2026, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद,यू.के.
(वफ़ा महीने की तिथि 17 ,1406 हश)

आँहुज़ूर ﷺ की बेमिस्ल शुक्रगुज़ारी (अनोखा आभार)।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba- 17.07.2026

محلہ احمدیہ قادیان،پنجاب،143516

أَشْهَدُ أَنْ لا إِلَـهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

امّا بعد فاعوذ بالله من الشيطٰن الرجيم۔بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمَنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمَنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مَالِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡهِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡهِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशहुद, तअव्वुज़, सूर: फ़ातिहा, की तिलावत के बाद हुज़ूरे अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल् अज़ीज़ ने फ़रमाया: अल्लाह तआला ने इंसान को पैदा किया तो उससे पहले इसके फ़ायदे के लिए बेशुमार नेअमतें पैदा कीं। अल्लाह तआला का यह उपकार यकीनन इस बात का तकाज़ा करता है कि बंदा उसका शुक्र अदा करे। हर नबी ने अपने मानने वालों को यह नसीहत फ़रमाई कि अल्लाह तआला के शुक्रगुज़ार बंदे बनो। सबसे बढ़कर शुक्रगुज़ारी का नमूना हमारे आक़ा हजरत अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ ने दिखाया।

आँहजूर ﷺ के इसी उसवा, दुआओं और तरीक़े का आज ज़िक्र करूंगा। एक रिवायत में आता है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया कि ईमान दो हिस्सों पर मुश्तमिल है। आधा सब्र में और आधा शुक्र में है।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि अगर देखा ज़ाए तो सब्र भी शुक्र का ही एक पहलू है। फिर नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया कि मोमिन का मामला सरासर (पूर्णतः) ख़ैर है और यह मोमिन के अलावा और किसी के लिए नहीं। अगर इसे कोई खुशी पहुंचती है तो वह शुक्र करता है और यह इसके लिए ख़ैर है और अगर इसे कोई तकलीफ़ पहुंचती है तो वह सब्र करता है और यह भी इसके लिए ख़ैर है।

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया कि जो लोगों का शुक्र अदा नहीं करता वह ख़ुदा का भी शुक्र नहीं करता। अल्लाह तआला की शुक्रगुज़ारी के साथ बंदों की भी शुक्रगुज़ारी का आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया। अगर इस पर अमल हो तो हकीकी (असली) इस्लामी मुआशरा क़ायम हो सकता है।

हजरत नुअमान बिन बशीर रज़ी. से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया कि जो थोड़े पर शुक्र अदा नहीं करता वह ज्यादा पर भी शुक्रगुज़ार नहीं होता। अल्लाह तआला की नेअमतों का ज़िक्र करना भी शुक्र है, फ़रमाया जमाअत रहमत है और तफ़रक़ा अज़ाब है।

हजरत उसामा बिन जैद रज़ी. ने बयान किया कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया कि जिससे कोई नेकी की गई और उसने इसके करने वाले से कहा 'जज़ाकल्लाह खैरा' तो उसने तारीफ़ का हक़ अदा कर दिया। फ़रमाया कि जब अल्लाह तआला किसी क़ौम को ख़ैरो बरकत अता करना चाहता है तो उनकी उम्रें बढ़ा देता है और उन्हें शुक्र इल्हाम करता है यानी शुक्र अदा करने की तौफीक देता है।

रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ी. का हाथ पकड़ा और फ़रमाया कि ऐ मुआज़! बख़ुदा मैं तुझ से मोहब्बत करता हूं। मैं तुम्हें ताकीद करता हूं कि तुम हर नमाज़ के बाद हरगिज़ न छोड़ना कि तुम कहो कि 'ऐ अल्लाह! मेरी मदद फ़रमा अपने ज़िक्र के लिए, अपने शुक्र के लिए और अपनी इबादत की खूबसूरती के लिए।'

एक रिवायत में है कि आप ﷺ ने सहाबा रज़ी. को यह दुआ सिखाई कि 'ऐ अल्लाह! मैं हर अमल में तुझ से सबात (मज़बूती) तलब करता हूं और तुझ से हिदायत की पुख्तगी मांगता हूं और तुझ से तेरी नेअमत का शुक्र मांगता हूं और तेरी इबादत का हुस्न और तुझ से सच बोलने वाली ज़बान मांगता हूं, और क़ल्बे सलीम (कोमल मन) में तेरी पनाह चाहता हूं और इस शर से जो तू जानता है और इस ख़ैर से जो तू जानता है और तुझ से बख्शिश तलब करता हूं।'

आँहज़रत ﷺ से सवाल किया गया कि नमाज़ में करने के लिए कौन सी दुआ सबसे बेहतर है? तो आप ﷺ ने फ़रमाया: 'ऐ अल्लाह! तमाम तारीफें तेरे लिए हैं और सारा शुक्र तेरे लिए है और सारी बादशाही तेरे लिए है और सारी मख्लूक तेरी है और हर मामला तेरी तरफ़ लौटता है हम तुझ से हर तरह की भलाई मांगते हैं और हर शर से तेरी पनाह चाहते हैं।'

फिर आप ﷺ की एक दुआ यूं मिलती है कि 'ऐ मेरे रब्ब! मेरी मदद कर और मेरे खिलाफ़ किसी की मदद न कर और मेरी नुसरत फ़रमा और मेरे खिलाफ़ किसी की नुसरत न कर और मेरे लिए तदबीर कर और मेरे खिलाफ़ तदबीर न कर और मुझे हिदायत दे और मेरे लिए मेरी हिदायत आसान कर दे और मेरी मदद कर इसके खिलाफ़ जिसने मुझ पर ज्यादती की। ऐ अल्लाह! मुझे अपना शुक्रगुज़ार बना, अपना ज़िक्र करने वाला, तुझसे डरने वाला, तेरा फ़रमांबरदार, तेरी बहुत इताअत करने वाला, तेरी तरफ़ बहुत ज्यादा झुकने वाला बना, ऐ मेरे रब्ब! मेरी तौबा कबूल कर, और मेरी दुआ कबूल फ़रमा और मेरी हुज्जत (विवशता) क़बूल कर

और मेरे दिल को हिदायत दे और मेरी जबान को सीधा कर, और मेरे दिल से कीना (द्वेष) दूर कर दे।'

फिर एक और दुआ है कि 'ऐ अल्लाह! मुझे ऐसा बना दे कि मैं तेरा बहुत ज्यादा शुक्र करूं और कसरत से तेरा ज़िक्र करूं, और तेरी नसीहत की पैरवी करूं, और तेरे ताकीदी हुक्मों को याद रखूं।'

हुजूरे अनवर ने फ़रमाया कि यह दुआ इंसान रोज़ करे तो गलत किस्म के ख़यालात भी पैदा नहीं होंगे। गलत किस्म के काम भी इंसान नहीं करेगा।

आंहज़रत ﷺ और आपके सहाबा रज़ी. बारिश के पहले कतरों को अपने सरों पर लेते और आप ﷺ फ़रमाते कि यह हमारे बुलंदो बाला रब्ब की तरफ़ से ताज़ा नेअमत आई है, यूं बारिश पर शुक्र किया करते।

बैतुल ख़ला (शौचालय) से बाहर तशरीफ़ लाते तो आंहजूर ﷺ यह दुआ करते कि 'तमाम तारीफें उस अल्लाह के लिए हैं जिसने हानिकारक चीज़ मुझ से दूर कर दी और मुझे तंदुरुस्ती अता की।'

जब रात को अपने बिस्तर पर लेटते तो यह दुआ करते 'ऐ अल्लाह! तेरे नाम से ही मैं मरता और जीता हूं।' जब आप ﷺ जागते तो दुआ करते कि 'सब हम्द अल्लाह ही के लिए है जिसने हमें जिंदा किया बाद इसके कि हमें मारा और उसी की तरफ़ हमने लौट कर ज़ाना है।'

आप ﷺ खाना खाने लगते तो अल्लाह तआला का शुक्र करते, नया कपड़ा पहनते तो अल्लाह तआला का शुक्र अदा करते, अर्थात कोई मौका ऐसा न था जब आप ﷺ अल्लाह तआला का शुक्र अदा न करते और हम्दो सना (महिमा, प्रशंसा) बयान न करते।

आंहजूर ﷺ के सामने एक शख्स आया जिसके परागंदा (उलझे हुए) बाल थे, आप ﷺ ने फ़रमाया कि क्या यह कोई चीज़ नहीं पाता जिससे अपने बालों को दुरुस्त करे। एक दूसरे आदमी को देखा जो मैले कपड़े पहने हुए था। आप ﷺ ने फ़रमाया क्या इसे पानी मयस्सर नहीं जिससे अपने कपड़े धो ले।

आप ﷺ ने फ़रमाया: जन्नत में वह शख्स दाखिल नहीं होगा जिसके दिल में जर्रा बराबर (तनिक) भी तकब्बुर है। एक आदमी ने कहा कि इंसान पसंद करता है कि उसका लिबास अच्छा हो, उसका जूता अच्छा हो। आप ﷺ ने फ़रमाया कि अल्लाह ख़ूबसूरत है और ख़ूबबसूरती को पसंद करता है। इसमें कोई शक नहीं! तकब्बुर यह है कि अपने आप को बड़ा समझने की वजह से हक का इंकार करे और लोगों को हकीर ज़ाने।

जंगे बदर के मौके पर कुफ्फार की हलाकत और ख़ुदा तआला की तरफ़ से मिलने वाली फ़तह पर आप ﷺ ने अल्लाह तआला का शुक्र किया। इसी तरह फ़तह मक्का के मौके पर आपकी शुक्रगुज़ारी की दुआओं का ज़िक्र मिलता है। इस मौके पर आप स. ने हज़रत उम्मे हानी रज़ी. के घर पर आठ रकात चाश्त की नमाज अदा की।

हज्जतुल विदा (अंतिम हज) के मौके पर आंहजूर ﷺ की एक दुआ का ज़िक्र यूं मिलता है, 'अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं। वह एक है, उसका कोई शरीक नहीं, बादशाहत उसी की है, उसी की तारीफ़ है, वह हर चीज पर क़ादिर है। अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं, उसने अपना वादा पूरा किया और अपने बंदे की मदद की और लश्कर को अकेले पसपा कर दिया।'

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया कि दो ख़स्लतें ऐसी हैं जिसमें वे पाई ज़ाएं अल्लाह तआला उसे साबिर शाकिर लिख लेता है। पहली यह कि जो शख्स अपने दीन के मामले में उसकी तरफ़ देखे जो उससे बुलंद हो और उसकी पैरवी करे और दूसरी यह कि जो अपनी दुनिया के मामले में उसकी तरफ़ देखे जो उससे कमतर हो और फिर वह अल्लाह तआला की हम्द करे।

आप ﷺ ने फ़रमाया उसकी तरफ़ देखो जो तुम से नीचे है और उसकी तरफ़ न देखो जो तुम से ऊपर है, यह इस बात के ज्यादा लायक़ है कि तुम अल्लाह की नेअमत की तहकीर (अपमान) न करो। फ़रमाया: चार चीजें ऐसी हैं जिसे यह अता कर दी गईं उसे दुनिया व आखिरत की भलाई अता कर दी गई। शुक्रगुज़ार दिल, जिक्रे इलाही करने वाली जबान, आज़माइश के वक्त सब्र करने वाला बदन और ऐसी बीवी जो न अपनी अस्मतो इफ्फत (मान मर्यादा) के मामले में और न शौहर के मामले में उससे ख़यानत करे।

हज़रत आयशा रज़ी. बयान करती हैं कि नबी करीम ﷺ अपने तमाम औकात में जिक्रे इलाही किया करते थे। आंहजूर ﷺ ने अपनी उम्मत के सामने अपने शुक्रगुज़ारी के आला तरीन नमूने कायम फ़रमाए और हमें शुक्रगुज़ारी की नसीहत फ़रमाई।

खुत्बे के इख्तिताम पर हुजूरे अनवर ने फ़रमाया कि अगले जुमे से इन शा अल्लाह तआला जमाअत अहमदिया बर्तानिया का जलसा सालाना भी शुरू हो रहा है, दुआ करें कि अल्लाह तआला इसे हर लिहाज से बा-बरकत फ़रमाए। हर तरह अपनी हिफ्जो अमान में रखे। मौसम की शिद्दत, गर्मी की वजह से बाज ख़तरात भी हैं। अल्लाह तआला हर तरह अपनी हिफ्जो अमान में रखे। ड्यूटी देने वाले कारकुनान जिन्हें बाज दफा गर्मी में ख़ड़े होकर ड्यूटी देनी पड़ती है, सख्त ड्यूटियां भी होती हैं, अल्लाह तआला उन्हें भी अहसन रंग में अपने फ़रायज अदा करने की तौफीक अता फ़रमाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَن يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْ كُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है,सम्पर्क अनुवादक-9781831652

टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात,पंज़ाब - 18001032131